भारत में किसानों की दुर्दशा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पुनरुत्थान कार्यक्रम दार्शनिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक विचारों के साथ–साथ ऐसे विषयों को भी समाहित करता है, जो हमारे देश के भाग्य विधाता कृषकों से जुड़ा है। भारत कृषि प्रधान देश है। यहां पर आधी से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर है। कृषि करने के लिए जल की आवश्यकता होती है। यदि वर्षा समयानुकूल होती है तो अन्न अधिक उत्पन्न होता है और लोगों को खाने के लिए पर्याप्त अन्न उपलब्ध हो जाता है। अन्न जल से उपजता है जिसे मानव खाता है। उस अन्न में जो अन्न जिस मानसिक स्थिति से उगाया जाता है और जिस वृत्ति से प्राप्त किया जाता है, जिस मानसिक अवस्था में खाया जाता है, उसी अनुसार मानव की मानसिकता बनती है। कृषि को जीवन का आधार कहा गया है। खेती में उत्पन्न अनाज से मानव का जीवन चलता है। भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री ने जय जवान जय किसान का नारा दिया था। किसान दिन–रात परिश्रम करके अन्न उत्पन्न करता है। उसके उत्पादन का यदि उसे उचित मूल्य न मिले तो वह दुःखी होता है। आये दिन धरना, प्रदर्शन के द्वारा किसान अपनी मांगों को मनवाने के लिए सरकार पर दबाव डालते हैं। सरकार उनकी समस्याओं पर ध्यान न देकर उनके मुद्दो को टालती जाती है। आजकल किसान गावों को छोड़कर शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। मानव की मुख्य आवश्यकता रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा है। यदि इन बुनियादी आवश्यकताओ की पूर्ति भी वह नहीं कर पाता तो उसका पलायन करना जरूरी हो जाता है। किसान अपने खेतों में जब वस्तुओं का उत्पादन करता हैं तो वस्तुओं का उसे उचित मूल्य नहीं मिलता। पहले लोग पारम्परिक कृषि किया करते थे। लोगों की आवश्यकताएं भी कम थी जिससे परिवार का भरण–पोषण हो जाया करता था। पहले उत्तम खेती मध्यम बान की कहावत प्रसिद्ध थी किन्तु आजकल इसका ठीक उल्टा हो गया है। खेती में धीरे–धीरे लोगों की रुचि कम हो रही है।

सभी लोग व्यापार, वाणिज्य और शिक्षा को अपना रहे है। खेती से परिवार का भरण–पोषण भी नहीं हो पा रहा है।

औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप कृषि योग्य भूमि कम होती जा रही है। शहरों का विस्तार होता जा रहा हैं। किसान अपनी जमीन बेचकर शहरों की तरफ पलायन कर रहा है। धीरे–धीरे जमीन कम होती जा रही है खेती योग्य जमीन पर शहरीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। सड़कों का निर्माण हो रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि कृषि पर आधारित लोगों का जीवन–यापन करना कठिन हो गया है। जीवन–यापन के अन्य तरीकें किसान भी अपना रहे हैं। भारत की कृषि अधिकांश वर्षा के जल पर निर्भर करती है। यदि वर्षा अच्छी हो गयी तो फसल होती है और यदि वर्षा ठीक से न हुई तो किसान का लागत मूल्य भी बर्बाद हो जाता है। भारत में मौसम के हिसाब से रबी, खरीफ और जायद की फसलें उत्पन्न होती हैं। खरीफ की फसल पूरी तरह से वर्षा के जल पर निर्भर रहती है। रबी और जायद की फसलें नहरों, तालाबों और पम्पिंगसेट के जल पर निर्भर रहते हैं। यदि जल की उपलब्धता सही रही तभी कृषक की फसल ठीक–ठाक उसके घर आ पाती है। कृषि उत्पादन और फसल उत्पन्न होने के समय वस्तु का मूल्य इतना कम हो जाता हैं कि किसान को उचित मूल्य नहीं मिल पाता।

भारत के किसान हर प्रदेश में भिन्न–भिन्न फसलें पैदा करते हैं। कहीं पर गेहूं, कहीं पर चावल, कहीं पर मोटे अनाज, कहीं पर प्याज, कहीं पर सब्जियां और कहीं पर फल अधिक पैदा किये जाते हैं। एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में इनका आयात–निर्यात होता रहता है। उदाहरण के तौर पर महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश प्याज उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन प्रदेशों में अधिकांश किसान प्याज का उत्पादन करते हैं। किसान जब अपनी फसल को मंडियों में ले आता है तो कभी–कभी मंडियों में अस्सी पैसे और नब्बे पैसे किलों के हिसाब से वह प्याज बेचता है। इतने कम मूल्य पर बेचने पर किसान को बहुत घाटा होता है। परिणाम यह होता है कि आत्महत्या तक करनी पड़ती है। किसान बैंकों और साहूकारों से ऋण लेकर और रात–दिन परिश्रम करके फसल उत्पन्न करता है। फसल जब पककर तैयार होती है तो उसका मूल्य इतना गिर जाता है कि फसल बेचने पर किसान को घाटा ही होता है। इस

कारण से किसान की दुर्दशा होती हैं। यह केवल एक फसल की ही बात नहीं है सभी फसलों पर किसान को घाटा ही होता है। इस समस्या की तरफ सरकार यदि ध्यान नहीं देगी तो अन्नदाता किसान खेती करना छोड़कर के जीवन निर्वाह के लिए अन्य कार्य करने पर मजबूर हो जायेगा। किसानों को तो उनकी उपज का कम मूल्य मिलता है, किन्तु जब वही सामान बाजार में बिकने के लिए आता है तो उसका मूल्य बहुत अधिक होता हैं। उत्पन्न करने वाले किसान को तो कोई लाभ नहीं हुआ, किन्तु बिचौलिये मालामाल हो जाते हैं। सरकार को फसल का वाजिब मूल्य दिलाने के लिए कड़े कदम उठाने चाहिए, जिससे कि किसानों को भी न अधिक तो कम से कम उनका लागत मूल्य उन्हें जरूर मिले। भारत एक बहुत बड़ा आबादी वाला देश है। यहां पर विभिन्न जातियों धर्मों और मत–मतान्तररों के लोग रहते हैं। अपनी जीवन चर्या का निर्वाह करने के लिए लोग कुछ न कुछ कार्य करते हैं और जीविका का निर्वाह करते हैं। कृषकों की जीवन दशा को सुधारने के लिए सरकार की तरफ से समय–समय पर अनुदान दिया जाना चाहिए।